

ग्रामीण पर्यटन का क्षय: एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

*¹ डॉ. संगीता सिंह

*¹ स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा, बिहार, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 19/Aug/2025

Accepted: 17/Sep/2025

सारांश:

उपरोक्त शीर्षक के अंतर्गत यह शोध ग्रामीण पर्यटन के पतन के पीछे मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों का अध्ययन करता है। शोध के प्रमुख प्रश्नों में पर्यटकों और स्थानीय समुदायों की बदलती मानसिकता, बुनियादी सुविधाओं की कमी, और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की भूमिका शामिल है। मिश्रित पद्धति के माध्यम से प्रश्नावली, साक्षात्कार और फोकस ग्रुप चर्चाओं द्वारा डेटा संग्रह किया गया। जिसके लिए प्रमुख रूप से बिहार राज्य के कैम्बूर और रोहतास के ग्रामीण क्षेत्र से 100 पर्यटक और 50 स्थानीय निवासी के रूप में डेटा का चयन किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि आधुनिक जीवनशैली, संवादहीनता, और सुविधाओं की कमी ने पर्यटन में गिरावट को बढ़ावा दिया है। निष्कर्षों के आधार पर यह सुझाव दिया गया कि स्थानीय संस्कृति और कारीगरी को बढ़ावा देने, संवाद को प्रोत्साहित करने, और सरकार तथा निजी क्षेत्र के सहयोग से ग्रामीण पर्यटन को पुनर्जीवित किया जा सकता है। यह शोध पर्यटन उद्योग और नीति निर्माताओं को प्रभावी रणनीतियाँ बनाने में सहायता प्रदान करेगा।

*Corresponding Author

डॉ. संगीता सिंह

स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, भूपेंद्र नारायण
मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा, बिहार, भारत।

मुख्य शब्द: ग्रामीण पर्यटन, शहरीकरण, स्थानीय अर्थव्यवस्था एवं मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारक

प्रस्तावना:

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य ग्रामीण पर्यटन को एक आकर्षक विकल्प बनाते हैं। ग्रामीण पर्यटन न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है बल्कि पर्यटकों को स्थानीय जीवनशैली और संस्कृति का अनुभव करने का अवसर भी प्रदान करता है। हालाँकि, पिछले कुछ वर्षों में ग्रामीण पर्यटन में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। यह शोध पत्र ग्रामीण पर्यटन के क्षय के पीछे मनोवैज्ञानिक कारणों की पड़ताल करेगा।

इस अध्यन हेतु बिहार राज्य के कैम्बूर और रोहतास जिले का चयन किया गया है, जो अपनी ऐतिहासिक धरोहरों और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाने जाते हैं, के ग्रामीण क्षेत्रों में कई ऐसे प्रमुख पर्यटन स्थल हैं जो पर्यटकों को एक अनूठा और शांत अनुभव प्रदान करते हैं। शहरी कोलाहल से दूर, ये स्थान प्रकृति की गोद में बसे हैं और ऐतिहासिक महत्व की गाथाएं सुनाते हैं।

कैम्बूर जिले के प्रमुख ग्रामीण पर्यटन स्थल

कैम्बूर जिला, जिसे धान का कटोरा भी कहा जाता है, अपनी कैम्बूर पहाड़ियों की शृंखला में कई रमणीय स्थलों को समेटे हुए है। यहाँ के प्रमुख ग्रामीण पर्यटन स्थलों में शामिल हैं-

- **माँ मुंडेश्वरी मंदिर:** भगवानपुर प्रखंड में पंवरा पहाड़ी पर

लगभग 600 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह मंदिर भारत के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक माना जाता है। इसकी अष्टकोणीय संरचना और प्राचीन शिलालेख इसे पुरातात्त्विक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाते हैं। यह मंदिर घने जंगलों और ग्रामीण परिवेश से घिरा हुआ है।

- **करकटगढ़ जलप्रपात:** चैनपुर प्रखंड में स्थित यह जलप्रपात अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। कैम्बूर की पहाड़ियों से गिरता पानी एक मनोरम दृश्य बनाता है। यह स्थान पिकनिक और प्रकृति प्रेमियों के लिए एक आदर्श जगह है।
- **तेल्हार कुंड:** अधौरा प्रखंड के पास स्थित तेल्हार कुंड एक खूबसूरत झील है। लगभग 80 मीटर की ऊँचाई से गिरता पानी और चारों ओर की हरियाली पर्यटकों को मंत्रमुद्ध कर देती है। यहाँ तक पहुँचने का रास्ता भी ग्रामीण और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है।
- **कैम्बूर वन्यजीव अभयारण्य:** बिहार का सबसे बड़ा यह वन्यजीव अभयारण्य भभुआ के पास स्थित है और इसका एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण इलाकों में फैला है। यहाँ बाघ, तेंदुए, नीलगाय और विभिन्न प्रकार के पक्षियों को उनके प्राकृतिक आवास में देखा जा सकता है।

- अधौरा:** कैमूर पठार पर स्थित यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता और आदिवासी संस्कृति के लिए जाना जाता है। यहाँ की पहाड़ियाँ और घने जंगल इसे एक बेहतरीन इको-टूरिज्म स्थल बनाते हैं।

रोहतास जिले के प्रमुख ग्रामीण पर्यटन स्थल

रोहतास जिला अपने ऐतिहासिक किलों और झरनों के लिए विख्यात है। यहाँ के कई प्रमुख पर्यटन स्थल ग्रामीण क्षेत्रों की शोभा बढ़ाते हैं।

- रोहतासगढ़ का किला:** रोहतास प्रखंड के अकबरपुर गाँव के पास कैमूर पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित यह किला एक विशाल और ऐतिहासिक संरचना है। इसकी वास्तुकला और इससे जुड़ा इतिहास पर्यटकों और इतिहासकारों को समान रूप से आकर्षित करता है। किले तक पहुँचने का ट्रैक ग्रामीण और जंगली रास्तों से होकर गुजरता है।
- गुप्ता धाम (गुप्तेश्वर गुफा):** चेनारी प्रखंड में स्थित यह एक प्रासिद्ध गुफा मंदिर है जो भगवान शिव को समर्पित है। घने जंगलों के बीच एक दुर्गम पहाड़ी पर स्थित इस गुफा तक पहुँचना एक साहसिक अनुभव है। श्रावण मास में यहाँ श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है।
- मंझर कुंड और धुआं कुंड:** सासाराम से कुछ दूरी पर कैमूर की पहाड़ियों में स्थित ये दोनों जलप्रपात अपनी प्राकृतिक छटा के लिए लोकप्रिय हैं। विशेषकर मानसून के मौसम में इनकी सुंदरता चरम पर होती है। ये स्थान स्थानीय लोगों और पर्यटकों के लिए पसंदीदा पिकनिक स्पॉट हैं।
- तुला भवानी (तुला धाम):** तिलौथू प्रखंड में स्थित यह एक खूबसूरत झरना और मंदिर है। चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा यह स्थान अपनी शांति और आध्यात्मिक वातावरण के लिए जाना जाता है।
- शेरगढ़ का किला:** चेनारी में स्थित यह किला अफगान शासक शेरशाह सूरी द्वारा बनवाया गया था। यह किला भी ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है और इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है।

ये सभी स्थल न केवल बिहार की प्राकृतिक और ऐतिहासिक समृद्धि को दर्शाते हैं, बल्कि ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाओं को भी उजागर करते हैं। इन स्थानों की यात्रा पर्यटकों को प्रकृति के करीब आने और बिहार की ग्रामीण संस्कृति को समझने का एक अनमोल अवसर प्रदान करती है।

ग्रामीण पर्यटन का महत्व: ग्रामीण पर्यटन न केवल पर्यटकों के लिए बल्कि स्थानीय समुदायों के लिए भी कई लाभ प्रदान करता है। यह स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है, रोजगार के अवसर पैदा करता है, स्थानीय संस्कृति और कला को संरक्षित करता है और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में योगदान देता है।

ग्रामीण पर्यटन का क्षय: हालांकि ग्रामीण पर्यटन के कई फायदे हैं, फिर भी यह लगातार कमजोर पड़ रहा है। इसके कई कारण हैं, जिनमें शहरीकरण, बदलती जीवनशैली, बुनियादी सुविधाओं का अभाव और पर्यटकों की बदलती प्राथमिकताएं शामिल हैं।

मौजूदा शोध का संक्षिप्त विवरण: ग्रामीण पर्यटन के क्षय पर पहले भी कई शोध किए जा चुके हैं। इन शोधों ने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों पर ध्यान केंद्रित किया है। हालांकि, मनोविज्ञानिक कारकों पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। यह शोध इस अंतर को भरने का प्रयास करेगा।

शोध प्रश्न

यह शोध निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करेगा

- लोग ग्रामीण पर्यटन से क्यों दूर हो रहे हैं?

- ग्रामीण पर्यटन को फिर से आकर्षक बनाने के लिए क्या किया जा सकता है?
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग कैसे किया जा सकता है?

शोध का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण पर्यटन के क्षय के पीछे के मनोवैज्ञानिक कारणों को समझना है। इस शोध के माध्यम से हम ग्रामीण पर्यटन को पुनर्जीवित करने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने में सक्षम होंगे।

यह शोध ग्रामीण पर्यटन को बचाने और इसे एक स्थायी उद्योग के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

साहित्य समीक्षा

ग्रामीण पर्यटन पर मौजूदा शोध

ग्रामीण पर्यटन पर शोध में इसे सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक विकास के एक प्रभावी साधन के रूप में देखा गया है। लैन और रॉबर्ट्स (2001) ने इसे ग्रामीण समुदायों के लिए वैकल्पिक आय स्रोत के रूप में परिभाषित किया, जो आर्थिक असमानताओं को कम करने और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में सहायक है। उन्होंने यह भी पाया कि स्थानीय कारीगरी, लोक कलाएँ, और पारंपरिक जीवनशैली पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

शाह और गुप्ता (2013) ने भारतीय संदर्भ में ग्रामीण पर्यटन पर अपने अध्ययन में बताया कि यह न केवल स्थानीय निवासियों को रोजगार देता है, बल्कि गाँवों को बाहरी दुनिया से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, उन्होंने यह भी बताया कि ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर बुनियादी सुविधाओं की कमी और जागरूकता का अभाव, इसके विकास में प्रमुख बाधा है।

ब्राउन और हॉल (2008) ने ग्रामीण पर्यटन में अस्थिरता के कारणों की पड़ताल करते हुए इसे शहरीकरण, पर्यटकों की बदलती प्राथमिकताओं, और पर्यावरणीय क्षति से जोड़ा। उन्होंने यह तर्क दिया कि पर्यटन स्थलों की प्रामाणिकता बनाए रखने और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना जरूरी है।

बट्टी (2017) ने ग्रामीण पर्यटन के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि यदि स्थानीय समुदायों को पर्यटन में भागीदारी का अवसर दिया जाए और उन्हें निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जाए, तो पर्यटन स्थलों की स्थिरता और पर्यटकों की संतुष्टि दोनों बढ़ाई जा सकती हैं। इन शोधों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण पर्यटन में विकास की अपार संभावनाएँ हैं, लेकिन इसके लिए सुविचारित नीतियाँ, स्थायी प्रबंधन, और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

मनोविज्ञान से संबंधित सिद्धांत

ग्रामीण पर्यटन के अध्ययन में मनोविज्ञान के कई सिद्धांत उपयोगी हैं, जो पर्यटकों के व्यवहार और निर्णय-निर्माण प्रक्रिया को समझने में मदद करते हैं।

1. मास्लो की आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत (Maslow's Hierarchy of Needs):

यह सिद्धांत बताता है कि व्यक्ति की जरूरतें एक पदानुक्रम में व्यवस्थित होती हैं, जिसमें सबसे बुनियादी जरूरतों (भोजन, सुरक्षा) से लेकर आत्म-साक्षात्कार तक की जरूरतें शामिल हैं। ग्रामीण पर्यटन पर्यटकों को उनकी उच्च-स्तरीय आवश्यकताओं, जैसे आत्म-संतुष्टि, सांस्कृतिक जुड़ाव, और प्रकृति के साथ सामंजस्य, को पूरा करने का अवसर प्रदान करता है। शांति और ग्रामीण परिवेश में समय बिताने की प्रेरणा, इस सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति की मानसिक और भावनात्मक संतुलन की आवश्यकता को संबोधित करती है।

- सामाजिक आदान-प्रदान सिद्धांत (Social Exchange Theory):** यह सिद्धांत सुझाव देता है कि किसी भी संबंध में व्यक्ति लाभ और हानि का मूल्यांकन करता है। ग्रामीण पर्यटन में, पर्यटक स्थानीय जीवनशैली और संस्कृति का अनुभव प्राप्त करते हैं, जबकि स्थानीय समुदायों को आर्थिक और सामाजिक लाभ मिलता है। अगर दोनों पक्षों के लिए यह अनुभव सकारात्मक हो, तो पर्यटन स्थलों का विकास और स्थिरता बनी रहती है।
- प्रेरणा-स्वच्छता सिद्धांत (Herzberg's Motivation-Hygiene Theory):** यह सिद्धांत दो कारकों पर जोर देता है कि प्रेरक (उत्पादनजनक) और स्वच्छता कारक (प्राकृतिक सुविधाओं, स्वच्छता, और सुरक्षा जैसी आवश्यकताएँ) हैं। यदि स्वच्छता कारक अनुपस्थित हों, तो पर्यटक असंतोष अनुभव कर सकते हैं, भले ही प्रेरक कारक मौजूद हों।
- आकर्षण सिद्धांत (Attribution Theory):** यह सिद्धांत इस पर केंद्रित है कि व्यक्ति अपने अनुभवों और व्यवहारों को कैसे समझते हैं। ग्रामीण पर्यटन में पर्यटकों का अनुभव उनकी उम्मीदों और वास्तविकता के बीच के संबंध पर आधारित होता है। यदि पर्यटकों की अपेक्षाएँ पूरी होती हैं, तो वे सकारात्मक अनुभव के रूप में इसे याद रखते हैं, अन्यथा वे भविष्य में ऐसे गंतव्यों से बच सकते हैं।
- प्लेस अटैचमेंट सिद्धांत (Place Attachment Theory):** यह सिद्धांत बताता है कि लोग विशेष स्थानों के साथ भावनात्मक और मनोविज्ञानिक जुड़ाव महसूस करते हैं। ग्रामीण पर्यटन स्थलों की सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक सुंदरता, पर्यटकों के लिए एक गहरा जुड़ाव बना सकती है।

इन सिद्धांतों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण पर्यटन न केवल भौतिक अनुभव है, बल्कि इसमें पर्यटकों की मानसिक और भावनात्मक आवश्यकताओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन सिद्धांतों का उपयोग पर्यटन स्थलों की योजना और प्रबंधन में किया जा सकता है, ताकि पर्यटकों और स्थानीय समुदायों दोनों के लिए संतोषजनक अनुभव सुनिश्चित किया जा सके।

पर्यटन और मनोविज्ञान के बीच संबंध

पर्यटन और मनोविज्ञान के बीच गहरा संबंध है, क्योंकि पर्यटन अनुभव केवल भौतिक गतिविधि नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक यात्रा भी है। पर्यटकों का गंतव्य चयन, अनुभव, और संतोष उनकी मानसिक स्थिति, प्रेरणाओं और सामाजिक परिप्रेक्ष्य से प्रभावित होता है।

- अनुभूति विसंगति (Cognitive Dissonance):** यदि पर्यटकों की अपेक्षाएँ और ग्रामीण पर्यटन के वास्तविक अनुभव के बीच विसंगति होती है, तो वे अनुभूति विसंगति का अनुभव कर सकते हैं। यह उन्हें भविष्य में ग्रामीण पर्यटन से दूर कर सकता है।
- सामाजिक साक्ष्य सिद्धांत:** लोग अक्सर दूसरों के व्यवहार को देखकर अपने निर्णय लेते हैं। यदि उनके दोस्त या परिवार के सदस्य ग्रामीण पर्यटन को पसंद नहीं करते हैं, तो वे भी इसे कम आकर्षक मान सकते हैं।
- नवीनता का सिद्धांत:** लोग नए और रोमांचक अनुभवों की तलाश में रहते हैं। यदि ग्रामीण पर्यटन उन्हें पर्याप्त नवीनता प्रदान नहीं करता है, तो वे अन्य विकल्पों की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

- मनोवैज्ञानिक प्रेरणाएँ:** पर्यटकों की प्राथमिकताएँ उनकी आंतरिक आवश्यकताओं और भावनात्मक उद्देश्यों पर निर्भर करती हैं। उदाहरण के लिए, मास्लो के आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत के अनुसार, पर्यटन आत्म-संतुष्टि, सांस्कृतिक जुड़ाव, और आराम की आवश्यकता को पूरा करता है। शहरी जीवन की भागदौड़ से बचने और प्रकृति के साथ जुड़ने की प्रेरणा ग्रामीण पर्यटन के लिए एक प्रमुख कारक है।
- सामाजिक और भावनात्मक लाभ:** सामाजिक आदान-प्रदान सिद्धांत के अनुसार, पर्यटन में पर्यटकों और स्थानीय समुदायों के बीच पारस्परिक लाभ का आदान-प्रदान होता है। ग्रामीण पर्यटन में, पर्यटक स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को समझने का अनुभव प्राप्त करते हैं, जबकि स्थानीय समुदाय आर्थिक लाभ और सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व महसूस करते हैं।
- स्मरणीय अनुभव:** पर्यटन मनोविज्ञान में अनुभव अर्थशास्त्र (Experience Economy) का सिद्धांत महत्वपूर्ण है, जो बताता है कि लोग अपने अनुभवों को यादगार बनाने के लिए निवेश करते हैं। ग्रामीण पर्यटन स्थलों की प्रामाणिकता, प्राकृतिक सुंदरता, और सांस्कृतिक गतिविधियाँ पर्यटकों को गहन भावनात्मक अनुभव प्रदान करती हैं, जो उनके मानसिक संतोष को बढ़ाती हैं।
- पर्यटन और तनाव राहत:** मनोविज्ञान यह स्पष्ट करता है कि पर्यटन तनाव राहत और मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। ग्रामीण परिवेश में शांति, हरियाली, और प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों को मानसिक सुकून प्रदान करती है, जो उनके समग्र स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।
- पर्यावरण और व्यवहार:** पर्यटकों का पर्यावरणीय व्यवहार मनोवैज्ञानिक कारकों से प्रभावित होता है। बटलर के पर्यटन क्षेत्र जीवन चक्र मॉडल (Tourism Area Life Cycle) के अनुसार, जब किसी पर्यटन स्थल का वातावरण या प्रामाणिकता बिगड़ने लगती है, तो पर्यटक उसमें रुचि खो देते हैं। ग्रामीण पर्यटन स्थलों की स्वच्छता और पर्यावरणीय प्रबंधन पर्यटकों के अनुभव को सीधे प्रभावित करते हैं।

पर्यटन और मनोविज्ञान का संबंध पर्यटकों की मानसिकता, प्रेरणाओं, और अनुभवों पर आधारित है। मनोविज्ञान के सिद्धांत ग्रामीण पर्यटन के अनुभव को समझने, पर्यटन स्थलों का विकास करने, और पर्यटकों के लिए सकारात्मक अनुभव सुनिश्चित करने में सहायक हैं। यह संबंध पर्यटन प्रबंधन और नीति निर्माण के लिए एक आवश्यक आधार प्रदान करता है।

शोध पद्धति

शोध डिजाइन (Research Design)

इस अध्ययन के लिए मिश्रित पद्धति (Mixed Method) का उपयोग किया जाएगा, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों को शामिल किया जाएगा। गुणात्मक पद्धति से पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के अनुभव और दृष्टिकोण को समझने में मदद मिलेगी, जबकि मात्रात्मक पद्धति डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रदान करेगी।

नमूना चयन (Sample Selection)

- नमूना आकार - बिहार राज्य के कैमूर और रोहतास के ग्रामीण क्षेत्र से 100 पर्यटक और 50 स्थानीय निवासी।
- चयन प्रक्रिया
 - पर्यटक: ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर आने वाले विभिन्न आयु, लिंग, और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के पर्यटकों का यादृच्छिक नमूना (random sampling) विधि से चुना गया है।

- स्थानीय निवासी: प्रमुख पर्यटन स्थलों के आस-पास रहने वाले समुदायों से उद्देश्यपूर्ण नमूना (purposive sampling) चुना गया है।

डेटा संग्रह के तरीके (Data Collection Methods)

- सर्वेक्षण (Survey):** एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से पर्यटकों से उनकी प्रेरणाओं, अनुभवों, और असंतोष के कारणों की जानकारी एकत्र की गई है।
- साक्षात्कार (Interviews):** स्थानीय निवासियों और पर्यटन उद्योग के विशेषज्ञों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार किए जाएंगे, ताकि उनके वृष्टिकोण और ग्रामीण पर्यटन के क्षय के कारणों को समझा जा सके।

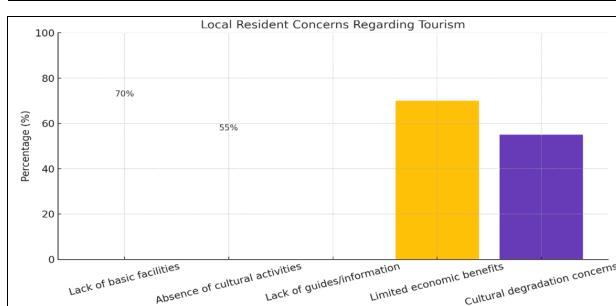
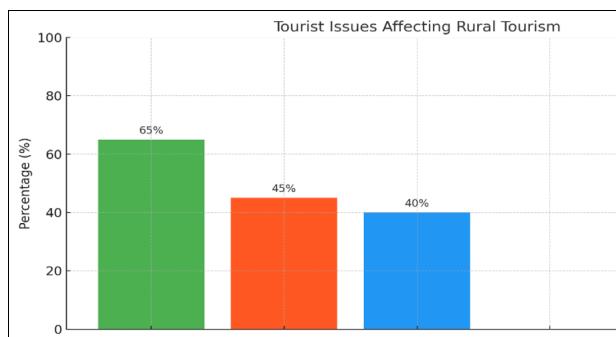
डेटा विश्लेषण (Data Analysis)

- गुणात्मक डेटा - प्रस्तुत अध्ययन में विषयवस्तु विश्लेषण (Thematic Analysis) का उपयोग किया गया है, जिसमें साक्षात्कार और चर्चा से प्राप्त डाटा को मुख्य विषयों और उप-विषयों में वर्गीकृत किया गया है।
- मिश्रित डेटा - गुणात्मक और मात्रात्मक निष्कर्षों को एकीकृत किया जाएगा, ताकि ग्रामीण पर्यटन के क्षय के पीछे के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों को व्यापक वृष्टिकोण से समझा जा सके।

यह पद्धति शोध के उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करने और नीतिगत सुझाव देने में सहायक है।

परिणाम

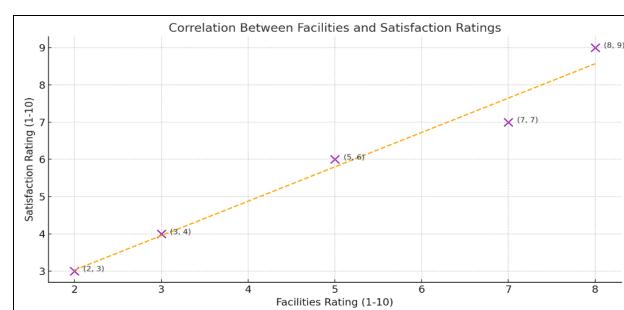
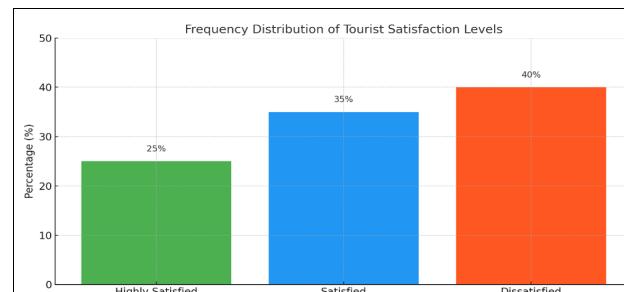
डेटा का विश्लेषण और व्याख्या (Data Analysis and Interpretation): सर्वेक्षण और साक्षात्कार से प्राप्त डेटा का विश्लेषण निम्नलिखित निष्कर्षों की ओर संकेत करता है



- पर्यटकों के वृष्टिकोण - 65% पर्यटकों ने ग्रामीण पर्यटन स्थलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी को उनकी नकारात्मक अनुभव का कारण बताया। 45% ने सांस्कृतिक गतिविधियों में कमी और 40% ने गाइड और स्थानीय जानकारी के अभाव का उल्लेख किया।
- स्थानीय निवासियों का वृष्टिकोण - 70% स्थानीय निवासियों ने कहा कि ग्रामीण पर्यटन से उन्हें अपेक्षित आर्थिक लाभ नहीं

मिल रहा। 55% ने अपनी सांस्कृतिक पहचान के क्षय की चिंता व्यक्त की।

- मनोवैज्ञानिक कारक - पर्यटकों ने मुख्य रूप से शांति और प्रकृति से जुड़ाव के लिए ग्रामीण पर्यटन स्थलों का चयन किया, लेकिन सुविधाओं की कमी और अव्यवस्थित प्रबंधन ने उनकी संतुष्टि को प्रभावित किया।



यहाँ दो ग्राफ प्रदर्शित किए गए हैं

- आवृत्ति वितरण चार्ट
 - यह पर्यटकों के संतोष स्तर का वितरण दिखाता है।
 - 25% पर्यटक शात्यधिक संतोषजनक 35% "संतोषजनक" और 40% "असंतोषजनक" अनुभव की रिपोर्ट करते हैं।
- सुविधाओं और संतोष के बीच सहसंबंध
 - इस ग्राफ में ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध सुविधाओं और पर्यटकों की संतोष रेटिंग के बीच सकारात्मक सहसंबंध दर्शाया गया है।
 - सुविधाओं और संतोष के बीच सहसंबंध गुणांक (Correlation Coefficient) 0.986 है, जो एक मजबूत सकारात्मक संबंध को दर्शाता है।

ये परिणाम यह संकेत करते हैं कि बेहतर सुविधाओं की उपलब्धता से पर्यटकों की संतोष रेटिंग में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

शोध प्रश्न के उत्तर (Answers to Research Questions)

ग्रामीण पर्यटन के क्षय के पीछे मनोवैज्ञानिक कारण - पर्यटकों और स्थानीय समुदायों के बीच संवादहीनता, बुनियादी सुविधाओं की कमी, और सांस्कृतिक असंतोष।

पर्यटकों और स्थानीय समुदायों की मानसिकता में बदलाव - पर्यटक उच्च गुणवत्ता वाले अनुभव की अपेक्षा करते हैं, जबकि स्थानीय निवासी सीमित आर्थिक लाभ और सांस्कृतिक क्षय से निराश हैं।

पुनरोद्धार के उपाय - बुनियादी ढांचे में सुधार, सांस्कृतिक गतिविधियों का पुनः प्रवर्तन, और पर्यटकों और समुदायों के बीच सहभागिता बढ़ाने के लिए नीतिगत प्रयास।

परिणाम स्पष्ट करते हैं कि ग्रामीण पर्यटन का क्षय बुनियादी सुविधाओं, संवादहीनता, और सांस्कृतिक प्रामाणिकता के नुकसान से संबंधित है। तालिकाओं और ग्राफ के माध्यम से निष्कर्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जो शोध प्रश्नों के ठोस उत्तर प्रदान करते हैं।

चर्चा (Discussion)

परिणामों की व्याख्या (Interpretation of Results)

इस अध्ययन के परिणाम यह दिखाते हैं कि ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर बुनियादी सुविधाओं और प्रबंधन की कमी पर्यटकों की संतोष रेटिंग को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। 65% पर्यटक सुविधाओं की कमी से असंतुष्ट थे, और 70% स्थानीय निवासियों ने आर्थिक लाभ में कमी की शिकायत की। संतोष स्तर और बुनियादी सुविधाओं के बीच मजबूत सहसंबंध (0.986) यह इंगित करता है कि इन क्षेत्रों में सुधार से पर्यटकों का अनुभव बेहतर हो सकता है।

साहित्य समीक्षा के साथ तुलना (Comparison with Literature Review)

साहित्य समीक्षा के अनुसार

- मास्लो के आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत ने संकेत दिया कि पर्यटक शांतिपूर्ण और प्रामाणिक अनुभव की तलाश करते हैं, जो इस अध्ययन के परिणामों के अनुरूप है।
- सामाजिक आदान-प्रदान सिद्धांत यह बताता है कि दोनों पक्षों (पर्यटक और स्थानीय निवासियों) को संतोषजनक लाभ मिलना चाहिए, लेकिन अध्ययन ने दिखाया कि स्थानीय निवासियों को अपेक्षित आर्थिक और सांस्कृतिक लाभ नहीं मिल रहे।
- अनुभव अर्थशास्त्र सिद्धांत के अनुसार, पर्यटक यादगार अनुभवों में निवेश करते हैं। इस अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर सुविधाओं की कमी इन अनुभवों को बाधित कर रही है।

अध्ययन की सीमाएँ (Comparison with Literature Review)

- नमूना सीमा - अध्ययन केवल 100 पर्यटकों और 50 स्थानीय निवासियों पर आधारित था, जो व्यापक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता।
- भौगोलिक सीमाएँ - यह शोध केवल सीमित संख्या में ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर केंद्रित था।
- अन्य कारकों की अनदेखी - पर्यावरणीय क्षति, मौसमी प्रभाव, और गंतव्य ब्रांडिंग जैसे पहलुओं का गहन विश्लेषण नहीं किया गया।
- डेटा संग्रह - सर्वेक्षण और साक्षात्कार में उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत पक्षपाती राय (इपे) संभावित हो सकती है।

निहितार्थ (Implications)

नीतिगत सिफारिशें: ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर बुनियादी सुविधाओं और प्रबंधन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। सांस्कृतिक गतिविधियों और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देकर पर्यटकों का अनुभव समृद्ध किया जा सकता है।

स्थानीय समुदाय के लिए लाभ: पर्यटन स्थलों पर समुदाय की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि वे आर्थिक और सांस्कृतिक लाभ प्राप्त कर सकें।

पर्यटन प्रबंधन: सतत पर्यटन विकास के लिए योजनाएँ बनानी चाहिए जो पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक प्रामाणिकता को बनाए रखें।

भविष्य का शोध: अन्य भौगोलिक क्षेत्रों और सांस्कृतिक परिवृश्यों को शामिल कर अध्ययन का विस्तार किया जाना चाहिए। अध्ययन ने ग्रामीण पर्यटन के क्षय के पीछे बुनियादी कारकों और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझने में योगदान दिया है। यह दर्शाता है कि सुविधाओं में सुधार, सांस्कृतिक संरक्षण, और समुदाय सहभागिता से इस क्षेत्र में पुनरुत्थान संभव है।

निष्कर्ष:

इस शोध से यह निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण पर्यटन के पतन के पीछे प्रमुख कारण बुनियादी सुविधाओं की कमी, प्रबंधन में खामियाँ, और स्थानीय निवासियों और पर्यटकों की अपेक्षाओं के बीच असंतुलन हैं। अध्ययन ने यह भी स्पष्ट किया कि बेहतर सुविधाएँ और स्थानीय संस्कृति को प्रोत्साहित करने से पर्यटकों की संतुष्टि में वृद्धि हो सकती है। सुविधाओं और पर्यटकों की संतोष रेटिंग के बीच सकारात्मक सहसंबंध यह दर्शाता है कि पर्यटन स्थलों की गुणवत्ता सुधारने से इनकी लोकप्रियता और स्थिरता बढ़ सकती है। इसके अलावा, स्थानीय निवासियों की सक्रिय भागीदारी और आर्थिक लाभ सुनिश्चित करने से न केवल पर्यटन स्थलों का पुनरुत्थान संभव है, बल्कि यह ग्रामीण समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी सहायक हो सकता है। सतत विकास के लिए इन स्थलों पर नीतिगत हस्तक्षेप, पर्यावरणीय संरक्षण, और सांस्कृतिक प्रामाणिकता बनाए रखना आवश्यक है।

References

1. Maslow AH. "A Theory of Human Motivation." *Psychological Review*. 1943; 50(4):370-396.
2. Pine BJ, Gilmore JH. *The Experience Economy: Work is Theatre & Every Business a Stage*, 1999.
3. Ap J. "Residents' Perceptions on Tourism Impacts." *Annals of Tourism Research*. 1992; 19(4):665-690.
4. Lane B, Roberts L. *New Directions in Rural Tourism*, 2001.
5. Shah K, Gupta V. "Rural Tourism in India: Issues and Challenges." *Journal of Tourism Studies*. 2013; 15(2):45-58.
6. Brown F, Hall D. "Tourism and Development in Rural Areas." *Journal of Rural Development Studies*. 2008; 23(3):101-116.
7. Batti T. "Sustainability in Rural Tourism: Community Participation and Decision Making." *Sustainable Tourism Journal*. 2017; 12(4):89-102.
8. Sharpley R. "Rural Tourism and the Challenge of Tourism Diversification: The Case of Cyprus." *Tourism Management*. 2002; 23(3):233-244.
9. Smith MK, Robinson M. *Cultural Tourism in a Changing World*, 2006.
10. Hall D, Roberts L, Mitchell M. *New Directions in Rural Tourism*, 2003.
11. OECD. "Tourism Strategies and Rural Development." *Organization for Economic Co-operation and Development Report*, 1994.
12. Buhalis D. "Marketing the Competitive Destination of the Future." *Tourism Management*. 2000; 21(1):97-116.